कितनी सारी मुस्कान!

मनोज दास

अनुवाद : **आरती स्मित**

चित्रांकन : **दुर्गादत्त पांडेय**

nbt.india
एकः सूते सकलम्

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत

NATIONAL BOOK TRUST, INDIA

10 से 12 वर्ष के बच्चों के लिए

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत की स्थापना पुस्तकों के प्रोन्नयन और पठन अभिरुचि के विकास के उद्देश्य से सन् 1957 में भारत सरकार (उच्चतर शिक्षा विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय) द्वारा की गई थी। न्यास द्वारा हिंदी, अँग्रेजी सहित 30 से अधिक भाषाओं व बोलियों में पुस्तकों का प्रकाशन किया जाता है। बच्चों की पुस्तकों का प्रकाशन सदैव से संस्था की प्राथमिकता रही है।

ISBN 978-81-237-8761-9

पहला संस्करण : 2019 (*शक* 1940)

So Many Smiles *(English Original)*
Kitni Saari Muskan *(Hindi)*

₹ 80.00

निदेशक, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज़-II
वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070 द्वारा प्रकाशित
www.nbtindia.gov.in
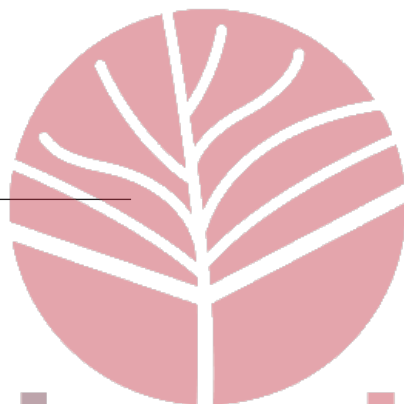
“बिना बादशाह के दिल्ली, आँय? अब तुम सोचोगे अ --अ--,” लतबर का चमकता चेहरा मुस्कराने के लिए बेचैनी से झूलने लगा। बापी जिसने प्रश्न किया था, उसे लतबर की आँखें ऐसी लग रही थीं मानो शहद की खोज में भिनभिनाती मधुमक्खी की जोड़ी।

‘‘बिना पूँछ की बिल्ली’’ रवि ने मदद की।

“मूर्ख! बादशाह की तुलना एक पूँछ से नहीं की जा सकती।” गौर करता हुआ बादल बोला। ‘‘बल्कि इसे ‘बिना पूँछ की बिल्ली’ होना चाहिए!”

‘‘मगर बिल्ली ही एकमात्र पूँछ वाली जीव नहीं है, पूँछ वाले जीव में तुम कह सकते हो बिना पूँछ का कोई बंदर, कोई गधा, कोई .....’’

‘‘बहुत हुआ! लतबर चिल्लाया। उसका चेहरा चमकने लगा। ‘‘अगर तुम बिना बादशाह के दिल्ली सोच सकते हो, तो वैसे ही बिना रोनी सूरत के बापी को भी।

‘‘हो हो हो.....!‘‘ रवि, बादल, धूमल, जय, शिव और साबू ...पूरे आधे दर्जन बच्चे हँसे।

‘‘क्या एकसुर में गानेवालों का दल है! ---सिर्फ तभी जब तुम्हारे गले में मिठास की कुछ झलक हो! लगे रहो, हिनहिनाना, भौंकना, भूँकना और म्याऊँ करना सब एक ही समय में जारी रखो!’’ बापी ने करारा जवाब दिया। वह अच्छी तरह जानता था कि कम-से-कम रवि और बादल जो उसकी ही कक्षा में पढ़ते थे, इतिहास की अपनी पहली पुस्तक के आधे तक पहुँचे थे, जो किसी बादशाह के बारे में एक शब्द नहीं कहती। उस पुस्तक में साफ-साफ लिखा है कि दिल्ली के अंतिम बादशाह बहादुर शाह जफर थे और अंग्रेजों ने बर्मा वर्तमान मे म्यांमार,

के जेल में उन्हें कैद रखा, जहाँ डेढ़ सौ साल से भी पहले उनकी मौत हो गई। अब हमारी अपनी लोकसभा है, एक राष्ट्रपति, एक प्रधानमंत्री और मंत्रियों का एक समूह है, जो देश चलाते हैं। यदि बादशाह होते भी तो घोड़े की पीठ पर लगे सोने के हौदे में बैठकर अकसर यात्रा नहीं करते, न ही लतबर उनके साथ किसी दूसरे घोड़े पर चाँदी के हौदे में बैठकर दौड़ लगाता। बापी की समझ उससे कह रही थी कि धातु की बनी सीट भले ही कीमती हो, फिर भी घुड़सवार को इससे बड़ी असुविधा होती होगी।

फिर भी, वह रोने के कगार पर था। यह उसकी कमजोरी थी जिसके कारण वह बहुत शर्मिंदगी महसूस करता था। और, यह बड़े अफसोस की बात थी कि शर्मिंदगी उसे रोने जैसा महसूस कराती। हाय! हर बार की तरह यह सिर्फ एहसास भर नहीं रहा था, वह सचमुच रो पड़ा!

वह खड़ा हुआ और चल दिया, हालाँकि, वह ऐसा बिल्कुल नहीं चाहता था। यह एक निराली सुबह थी और इसमें कोई शक नहीं कि लतबर से उसके जीवन की रोमांचक कहानी, जो उसने कारनामे किए, उसे सुनते हुए सैर करना बेहतर अनुभव होता।

और निश्चित तौर पर, उसके दोस्त भी नहीं चाहते थे कि वह छूट जाए। मगर वे क्या कर सकते थे अगर लतबर, उनके हीरो और अभिभावक, ने उसे साथ नहीं लिया? उसके सभी प्रशंसकों में से सिर्फ बापी ने ही उसके हथकंडों के उत्साही वर्णन पर बार-बार टोक,

उसका मजा किरकिरा कर उसे नाराज किया था। वह अजीब सवाल खड़े करता था। खैर, यह सब वह जानकारी के लिए करता था, उस महत्त्वपूर्ण मेहमान को अपमानित करने के लिए नहीं, जो कभी-कभी उसके गाँव मुट्ठीभर टॉफियाँ लेकर आया करता था– लंदन की बनी टॉफियाँ, जैसा कि उसने दावा किया– लड़कों के लिए अनूठा पुरस्कार था। ये वह अपनी लंबी कहानियाँ सुनने के बदले सुननेवालों में बाँटता था। वे उसे कैसे नाराज कर सकते थे– उनमें से एक या दो उसकी डींगों की सच्चाई पर संदेह करते थे, तो भी? बापी के साथ समस्या यह थी कि वह अपना संदेह उसी तेजी और होशियारी से मुँह से बाहर निकाल देता, जिस तरह उनमें से कोई मच्छर काटने पर व्यवहार करेगा।

उदाहरण के लिए, जैसा लतबर ने सुनाया था, एक बार गंगा नदी में नौका पर एक शादी के जलसे को एक विशाल मगरमच्छ का सामना करना पड़ा, जिसने दूल्हे को पानी के अंदर गिरा दिया और तुरंत निगल लिया था।

लतबर ने उसी समय चक्करदार पानी के अंदर फूर्ती से छलाँग लगाई और मगरमच्छ के जबड़े को पकड़कर उसे दो हिस्सों में चीर डाला और दूल्हे को उसकी सजी हुई पगड़ी सहित निकाल लिया। बापी सिर्फ यह इशारा करना चाहता था कि पगड़ी तो पूरी तरह खुल गई होगी न! संभव है कि दूल्हे ने अपनी शर्मीली दुल्हन के बगल में बैठने से पहले अपनी पगड़ी को जल्दी से दोबारा ठीक किया हो। यदि पगड़ी दूल्हे के सिर पर कसकर बाँधी गई थी तो लतबर नाराज होने के बजाय विस्तार से क्यों नहीं बता सकता?

आह! बापी ने जरा-सा चुटकी लेने पर आँसू बहा दिया। और उसने चुपके से आश्चर्य जताया कि कैसे रवि, बादल और दूसरे साथी अपने आँसू छिपा लेते हैं और रोनी सूरत बनने नहीं देते, यहाँ तक कि जब शिक्षक पूरे पीरियड के लिए बेंच पर खड़ा कर देते हैं, तब भी। एक बार बापी ने दो दिन तक पानी पीने से परहेज किया ताकि उसकी आँखों को आँसू गिराने का कोई बहाना न मिले, जब उसे उकसाया जाए तो भी। मगर यह प्रयोग असफल रहा। जब नए शिक्षक आए, जिन्हें दूसरा पंडित बुलाया जाता था, उन्होंने उससे सप्ताह में किसी ऐसे दो दिन का नाम पूछा जो टी (T) से शुरू होता है। उसने उत्तर दिया, 'टूडे और टुमॉरो'। जब शिक्षक ने उस पर नाक-भौंह

सिकोड़ी, किनारे बैठी दो शरारती लड़कियाँ एक-दूसरे को देखकर दबे मुँह हँसने लगीं। वे बहुत घमंडी थीं, क्योंकि अब तक के उस क्षेत्र के इतिहास में वे लड़कियाँ ही स्कूल में पढ़ने आती थीं। शिक्षक उनके पाठ्यक्रम से आगे निकल चुके थे और उन्हें अंग्रेजी वर्णमाला पढ़ा दी थी और शुरुआती महत्त्व के एक दर्जन अंग्रेजी शब्द भी बताए। खैर, बापी की आँखों से आँसू ऐसे बहे मानो नींबू निचोड़ा गया हो।
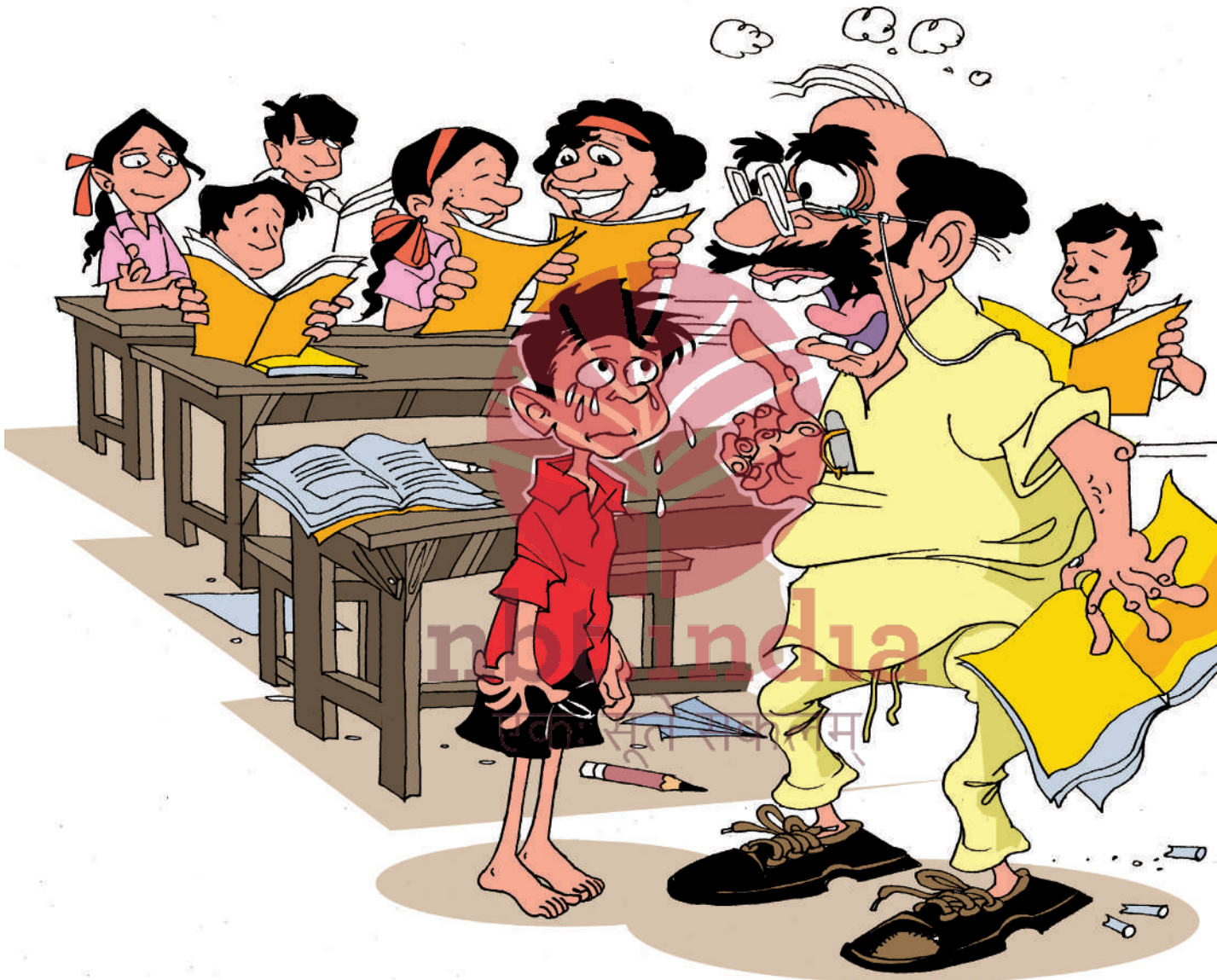
कुछ कदम चलने के बाद बापी ने अपने कंधे की तरफ सिर घुमाकर देखा। धूमल उसे लौट आने का इशारा कर रहा था। बापी उसके इशारे के अनुसार चलता हुआ बहुत खुश हुआ, हालाँकि उसका चेहरा उसके औसत आकार से अभी भी थोड़ा बड़ा दिख रहा था।

लड़के गौर से लतबर की बातें सुन रहे थे। वह शहर में रहता था और कभी-कभी अपने मामा के घर उनके गाँव आया करता था। उन बच्चों के बीच वही एक अकेला आदमी था जिसने प्रसिद्ध महानगर दिल्ली में अपना अधिक समय बिताया था। इसके अलावा, उसने ऐसी मूँछ रखी थी जैसी उन्होंने केवल गल्प कथाओं में पढ़ी थी-- मजबूत, मोटी और शाही घुँघराली, ऊपर की ओर उठी हुई।

''तो, आपस में दोस्त बनने और साथ में सवारी करने से पहले यह बताना जरूरी है कि हमारा आमना-सामना कैसे हुआ। जैसे ही हम पहली बार मिले, वे गरजे कि मैं ऐसी अद्‌भुत मूँछ नहीं रख सकता जैसी उनके पिता या यहाँ तक कि उनके दादा ने भी नहीं रखीं। मुझे उनसे कहना पड़ा— जो मैं सामान्यतः प्रचार नहीं करता कि ये मूँछ शुरू से मेरी नहीं है, मगर उस आखिरी दानव से मिली जो मेरे शहर के बाहर, जंगल में रहता था। कुश्ती के मुकाबले में उसे हराने पर इस जाति के रिवाज के अनुसार उसने अपनी मूँछ मुझे सौंप दी, और तब से मैंने इसे एक यादगार चिह्न की तरह पाला है," लतबर मुँह दबाकर हँसा।

"कैसे?" बापी एकाएक बीच में बोल उठा। "अगर यह तुम्हारी असली मूँछ नहीं है, तो यह तुम्हारे चेहरे के साथ इतनी कसकर चिपकी नहीं हो सकती, ऐसा मुझे लगता है!" बेशक बापी द्वारा मूँछ निकलने के तरीके के बारे में खोज करने की बेहद व्यक्तिगत और निजी वजह थी। उसकी बहुत अधिक इच्छा थी कि वह जल्द से जल्द एक प्रभावशाली मूँछ उगाए। उसे उम्मीद थी कि अपने रोने के स्वभाव को छिपाने के लिए यह सही मुखौटा रहेगा।

"क्या तुम्हें लगता है, सच में?" "मुझे लगता है कि तुम हिंदुस्तान के इस पूर्वी हिस्से में सबसे बड़े मूर्ख हो," लतबर गरजा और बात जोड़ी, "जो तुम्हारी बुद्धि से बहुत दूर है, मूर्ख बच्चे! वह यह है कि महाकाय ऐसे छोटे-छोटे चमत्कार कर सकते हैं। दुर्भाग्य से दानवों के नस्ल का वह आखिरी महाकाय भी पिछले साल मर गया; नहीं तो मैं उससे कह सकता था कि बादशाह के विदूषक की टोपी तुम्हारे उपजाऊ सिर पर लगा दे, ताकि वह यहाँ अपनी जड़ें जमा ले।"

बापी के होंठ यूँ गोल हुए मानो प्लास्टिक के चम्मच को गरम ओवन पर रख दिया गया हो और आँसू की दो बूँदें उसके गालों पर अविश्वसनीय तेजी से बह निकलीं।

“तुम्हारा चेहरा एक हँसते हुए हायना (लकड़बग्घा)– जैसा कि उस जीव को अंग्रेजी में कहते हैं– के भी आँसू बहा देगा,” ततबर घूरकर बोला।

और जैसे ही उसने यह कहा, बापी की आँखें फिर से बरसने लगीं।

“तरस आता है कि तुम जिस जगह की यात्रा करोगे, उस जगह को गीला कर दोगे,” जय आह भरते हुए मगर अगाध स्नेह से बोला।

“सचमुच अफसोस की बात है,” दूसरे सहमत हुए।

बापी ने भी आँसू पोंछते हुए सहमति में अपना सिर हिलाया। इस विषय को लेकर विवाद का कोई मतलब नहीं था क्योंकि वे लोग बापी द्वारा बात-बात पर चेहरा खीरे की तरह तुरत लंबा कर लेने की आदत से उस पर भौंहें सिकोड़ रहे थे।

लतबर ने बात आगे बढ़ाई– "अगर मैं अपनी मूँछ के थिरकते किनारे को कटवाने के लिए राजी हो जाता तो बादशाह मुझे सोने की सौ मुहरें देने को तैयार थे।"

"लेकिन आजकल सोने की मुहरें कोई इस्तेमाल नहीं करता!" बापी ने बात काटी।

"चुप रहो!" लतबर गरजा।

"तुम एक बादशाह से यह उम्मीद नहीं कर सकते कि वे तुम्हारे जंग लगे सिक्के और गंदे रुपये को पकड़ेंगे, कर सकते हो क्या?'' शिव ने पूछा। दूसरों ने भी बापी को अपमान भरी नजर से देखा।

"मगर मैंने लालच नहीं किया,'' लतबर लगातार कहता रहा। "तब, क्या तुम जानते हो उसने क्या किया? तुम नहीं जानते ये मुझे पता है, हालाँकि यह संसार के सभी अखबारों में दिखाई जा चुकी है।" उसने अपने सुनने वालों को यह कहने की चुनौती दी कि वे जानते हैं!

"हम स्वीकारते हैं कि हम नहीं जानते!" जय बोला। दूसरों ने भी सहमति में सिर हिलाया और धीरे से बोले।

''नहीं, सभी अखबारों में नहीं,'' बापी ने ईमानदारी से लतबर को सही साबित करने की कोशिश की। "मेरे पिता साप्ताहिक लायन्स रोर को डाक से मँगवाते हैं। अगर उसके किसी पन्ने पर आपके और बादशाह के बारे में कुछ भी छपा होता तो वे माँ को जरूर बताते और मैं जरूर सुनता।" उसने आगे कहा।

''मैं कहता हूँ, अपना मुँह बंद रखो!" लतबर चिल्लाया। "मैं वह अंतिम व्यक्ति होऊँगा जो तुम्हें अपने साथ इस बड़ी सैर पर ले जाए।"

गाड़ी पहले ही पहुँच चुकी थी। लतबर ने सभी लड़कों को इसमें बैठने का आदेश दिया, मगर उसने बापी को रोक दिया।

"मगर मैं सचमुच जानना चाहता हूँ कि बादशाह ने आपके लिए क्या किया था! सचमुच!" बापी ने दलील दी, उसकी आवाज हर दूसरे शब्द पर टूटने लगी।

मगर लतबर गाड़ी के अंदर कूदा और गाड़ीवान को चलने का आदेश दिया।

बापी तिलमिलाया-सा खड़ा था। वह महसूस कर सकता था कि उसके दोस्त ओझल

होती गाड़ी में से, सहानुभूति भरी निगाह से उसे देख रहे हैं– यहाँ तक कि उनमें से शायद एक या दो भीगी आँखों से। मगर उसकी खातिर उन्होंने मयूर पर्वत के दूसरी तरफ देखने जाने का अवसर हाथ से जाने नहीं दिया। वह एक खूबसूरत घाटी थी जिससे पत्थरों के ढेर से फूटकर निकली मीठे पानी की छोटी नदी देखी जा सकती थी। लड़कों को गाड़ी पर सवारी कराने की परवाह किसने की होगी?

गर्मी की छुट्टी खत्म होने को थी। वह दिन दूर नहीं था जब उनके प्राथमिक विद्यालय के दोनों पंडित अपने दूर के घर से लौटकर आने वाले थे और चमकदार बेंतों को बच्चों की पीठ पर आजमाने के लिए बेचैन होते थे। अजूबा लतबर भी अपने महान शहर में जल्द ही लौट जाएगा, जहाँ उसकी प्रमुख व्यस्तताएँ लॉलीपॉप खाने की और जैसा कि उसने लड़कों को बताया था, किसी बहुत ही कोमल राजकुमारी के साथ समय बिताने की थी।

पर्वत पार करके घाटी तक जाने का एक छोटा रास्ता था। मगर कौन था जो पहाड़ के दानव से डरा हुआ नहीं था? गाँव के सभी शिशु अपने माँ-बाप के बाद लगभग पहली बात के रूप में दानव के बारे में ही जानते थे। उसके खुरपे जैसे दाँत, लंबी लाल जीभ, एक ऐसा पेट जो हाथी को भी शरमा दे, और उस नन्हे बच्चे को खाने के लिए अनंत भूख जो बहुत अधिक रोते हैं या अपने मुश्किल सवालों से अपने पिता और चाचा को परेशान करते हैं, जैसे कि किसने दादाजी के दाँत तोड़ दिए या गाँव के साहूकार का पेट इतना बड़ा क्यों है?

बापी को पूरी तरह पता नहीं था कि महाकाय और दानव में कौन अधिक भयंकर है? शायद दानव। मगर फिर भी, लतबर ने कहा कि यदि वह उनके रास्ते में आया तो वह उस प्राणी को हरा सकता है। मगर वह निश्चय नहीं कर पा रहा था कि उसके द्वारा दानव को पहाड़ से नीचे फेंकने से पहले दानव उसके कितने असहाय साथियों को खा जाएगा।

गाड़ी दूर मोड़ पर जाकर गायब हो गई। बापी ने चारों तरफ सिर घुमाकर देखा। आसपास एक जीव तक नहीं था। उसने रोना-धोना शुरू किया, मगर अपनी आवाज पर काबू रखा ताकि बरगद के पेड़ पर बैठा कौवा सुन न ले।
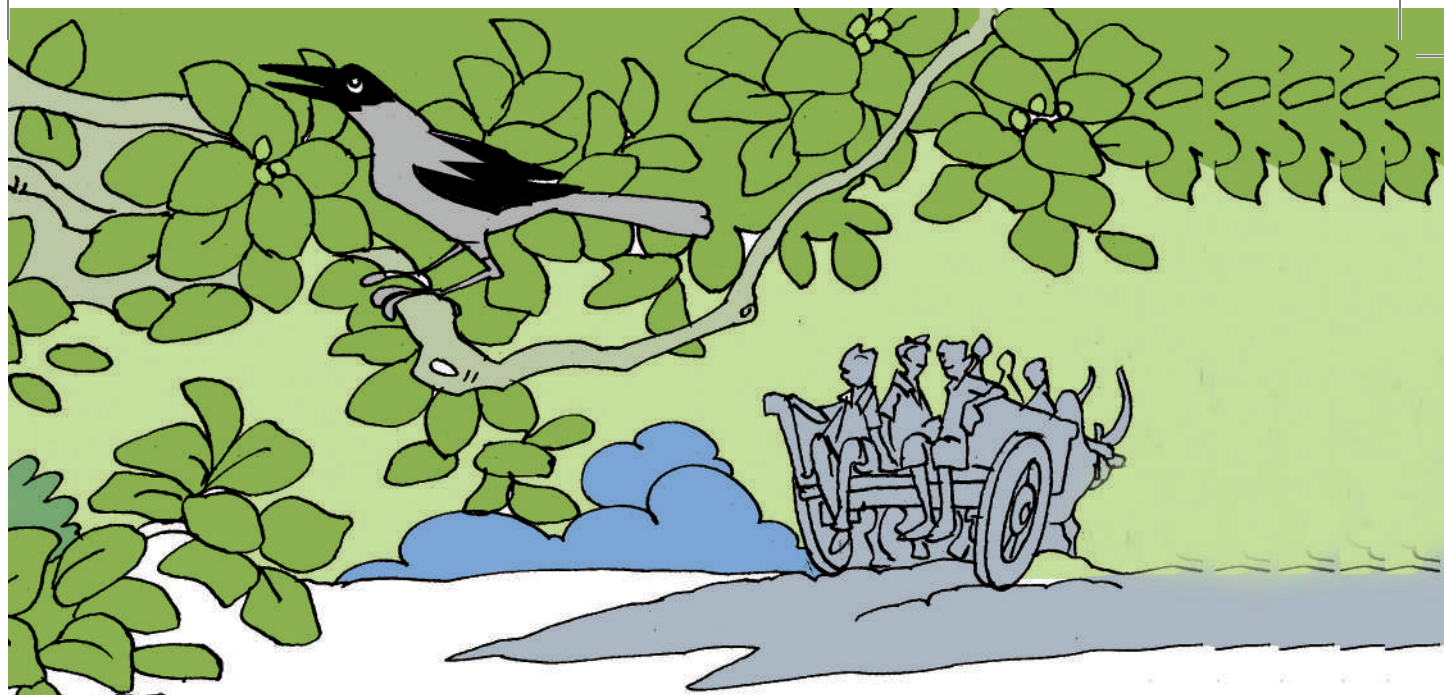
एक नन्ही चिड़िया चहचहाई और पेड़ की शाखा से उड़ान भरी। वह बापी के सिर के ऊपर चक्कर काटती हुई सीधे मयूर पहाड़ी की ओर उड़ गई।

आश्चर्य! चिड़ियों को दानव का डर कभी नहीं होता। उसने देखा, हर ढलती शाम उनका काफिला पहाड़ी के ऊपर और चारों ओर फैले जंगल में बने अपने-अपने घरों में खुशी-खुशी लौट जाता था।

उगता हुआ सूरज गुलाबी रोशनी में उसे नहला रहा था। आसमान रक्षक की तरह प्यार से देख रहा था। अपने अकेलेपन में अचानक उसने एक नई ताकत महसूस की। नहीं, उसके वापस घर लौटकर जाने का सवाल ही नहीं उठता। उसका चेहरा जल्द ही सब कुछ बता देगा और वह अपने छोटे भाई-बहनों के सामने हँसी का पात्र होगा। वे दोनों सैर-सपाटे का महत्त्व समझने के लिए बहुत छोटे हैं, फिर भी, उनपर यह छाप पड़ी थी कि वह कुछ ऐसा करने जा रहा है जो सिर्फ बड़ों के विशेष अधिकार में है।

पेड़ मयूर पहाड़ी की चोटी पर बह रही हवा की लय पर डोल रहे थे। बापी उस धुँधले दृश्य को पूरे पाँच मिनट तक टकटकी

लगाए देखता रहा। दृश्य बहुत ही अधिक मनमोहक लग रहा था मानो, बुला रहा हो।

और बिजली की गति से एक मजेदार प्रश्न ने उसे परेशान कर दिया, क्या वह अकेला पर्वत पार करके नदी के किनारे नहीं पहुँच सकता? अगर वह ऐसा कर सका तो यह कितना उत्साह भरा और अद्भुत होगा, वह लतबर को नीचा दिखा सकेगा और दोस्तों को हैरान।
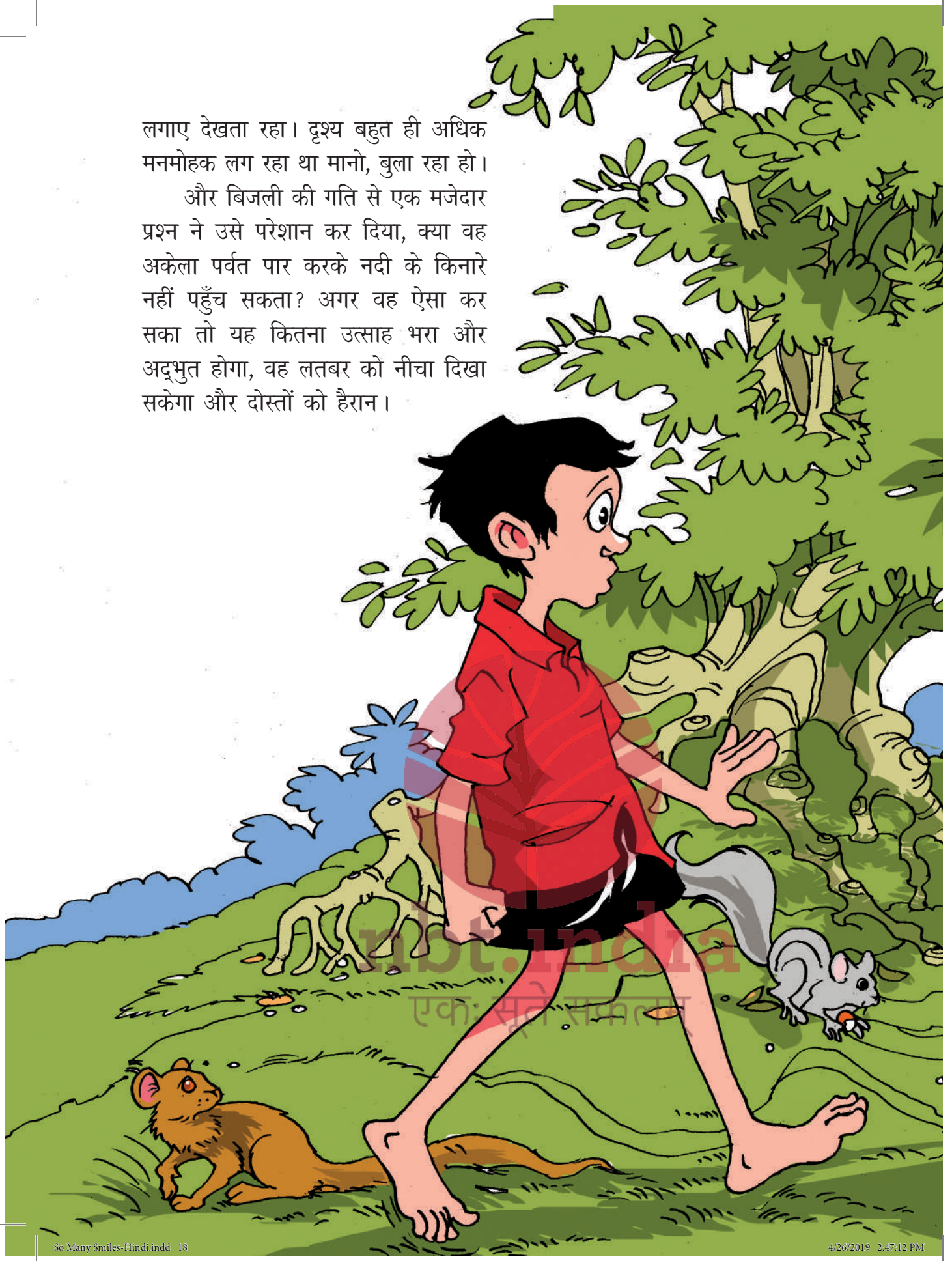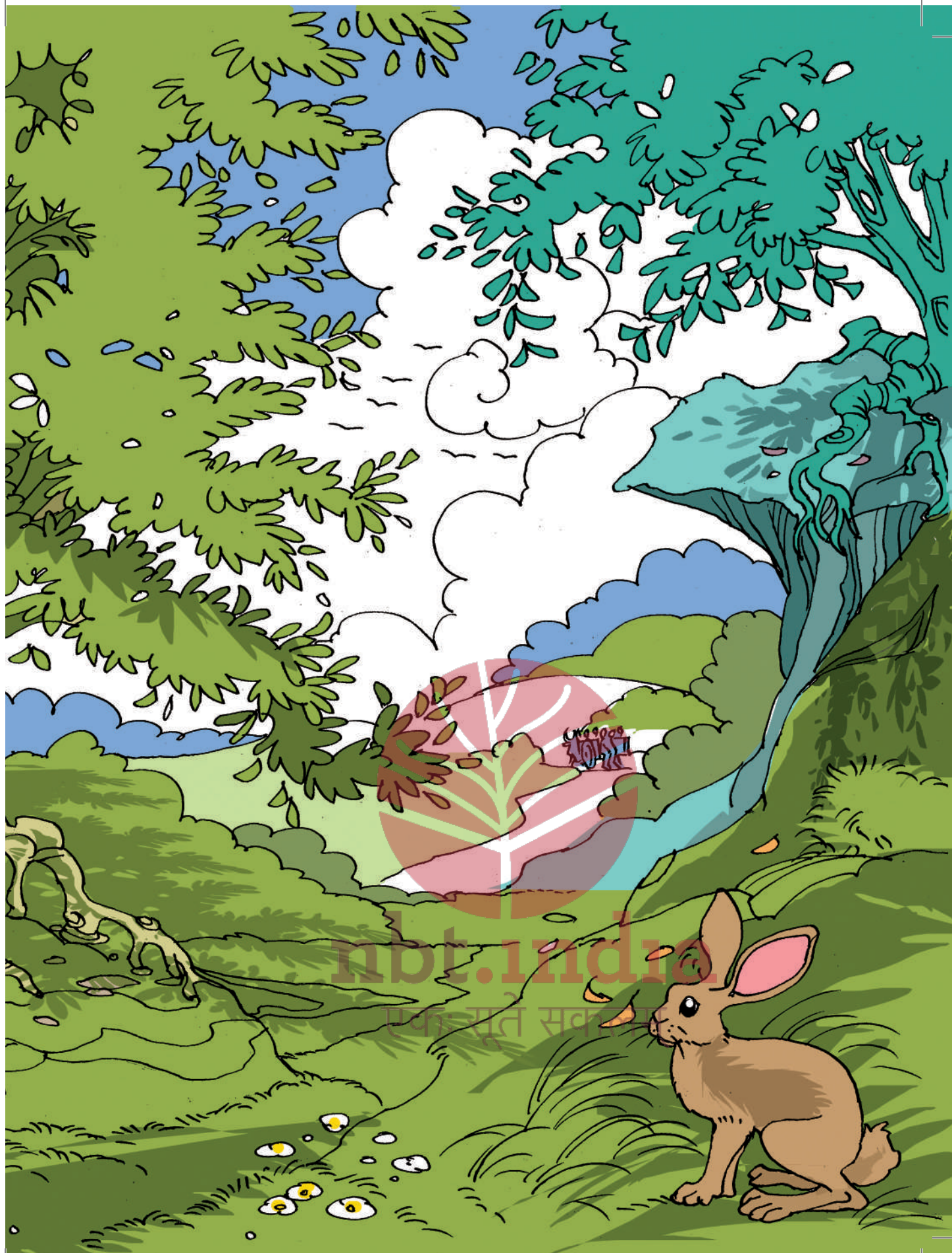
मगर इसका यह भी मतलब होगा कि दानव से सामना– एक डरावना प्रस्ताव।

लेकिन अगर वह दानव से चूक गया तो? उसने यह भी सुन रखा था कि इनसानों का दिन दानवों की रात होती है। सुबह के इस समय दानवों के लिए शायद शाम की शुरुआत होगी और वह लेटने की तैयारी में भी हो सकता है!

बापी चकित था– और रोमांचित भी कम नहीं, यह देखकर कि उसने पहाड़ी की दिशा में पहले ही तेज चलना शुरू कर दिया है।

जीवन में पहली बार वह कहीं अकेले जा रहा था, वह भी किसी के बताए रास्ते पर नहीं बल्कि सिर्फ अपनी खुद की इच्छा से।

जंगली घास के मैदान पर पड़ता हर कदम उत्तेजित करने वाला था, यहाँ तक कि गिलहरी और खरगोश का यहाँ-वहाँ दौड़ना भी उसे आनंदमय संवेदना देता था, मैना और कठफोड़वा की हर आवाज भी गुदगुदा रही थी।

उसने लंबी डग भरी और कभी-कभी दौड़ने भी लगता। अंदर से महसूस हो रही खुशी उसे आगे बढ़ने की प्रेरणा दे रही थी। उसने अपने-आपको एक नए रूप में जानना शुरू किया। हवा का एक झोंका तेज आवाज के साथ आया और उसके सिर पर पत्तों के ढेर फैलाते हुए बह चला। वह पहले से ही पहाड़ी की तराई पर पहुँच चुका था।

और उसके सभी बाल खड़े हो गए जब उसने आलीशान पिंड पर चढ़ना शुरू किया।

'क्या यह अद्‌भुत बात नहीं है कि मैं सचमुच ऐसा कर रहा हूँ?' वह अपने -आपसे बार-बार पूछता। 'लेकिन क्यों?' वह फिर पूछने लगा, 'अगर एक गिलहरी, एक खरगोश– और वहाँ जाता एक सियार– ऐसा कर सकते हैं तो बापी क्यों नहीं कर सकता?'

जहाँ तक गिलहरी, खरगोश और यहाँ तक कि सियार का संबंध था, यह बिल्कुल सही था। मगर सिर्फ वे ही ऐसे जीव नहीं थे जो पहाड़ी या जंगल में रहते थे। वह अच्छी तरह नहीं जानता था कि हँसने वाला लकड़बग्घा आखिर है क्या! मगर उसे यकीन था कि उसे रोता देख, लकड़बग्घे को आँसू बहाते देखना मजेदार होगा, उसको देखना– जैसा लतबर ने कहा था।

मगर वहाँ भेड़िया और बाघ भी होंगे, और इन सबसे ऊपर, दानव खुद भी! कुछ देर के लिए बापी के पाँवों को मानो लकवा मार गया, लेकिन उसके तुरंत बाद उसे लतबर

की गाड़ी की झलक मिली जो किसी कछुए की तरह बहुत दूर सड़क पर रेंग रही थी । वह भेड़ियों, बाघों और दानव को भूल गया। वह घुटनों और हाथों के बल से उतनी ही तेजी से पहाड़ी के आधे ऊपर तक चढ़ गया जितनी तेजी से एक मकड़ा।

आखिरकार, वह पहाड़ी की चोटी पर था! उसने गाँव के कई बड़ों से सुन रखा था कि दानव से सावधान रहना ही बुद्धिमानी है। इसलिए वह एक पत्थर के पीछे छिप गया और बाहर झाँका। और उस समय उसने जो देखा, उससे उसे कुछ देर तक अपनी आँखों पर विश्वास न हुआ! एक छोटी लड़की, पत्थर के विपरीत बैठ, अमरूद कुतर रही थी, उसके पाँव उसकी ही तरफ तने हुए हैं। उसके बगल में पके अमरूद से भरा थैला रखा है।

यह कहना बापी के लिए कठिन होता कि कौन उसे बाहर खींच लाया– वह प्यारी छोटी लड़की या वे प्यारे गोल अमरूद।

"हे!" उसने कहा। वह चौंकी। आधा खाया अमरूद उसके दाँत के बीच में ही था, मगर उसके जबड़े स्थिर हो गए।

"तुम हो– वो-वो-अरे नहीं! यह नहीं हो सकता..." लड़की भौचक्की-सी उसे लगातार देखती रही।

"तुम मेरी छोटी बहन टूनी से ज्यादा अलग नहीं हो, सिर्फ थोड़ी बड़ी हो। मगर फिर..."

"मगर फिर क्या?"

"कुछ नहीं," बापी ने एक मीठी मुस्कान दी, जैसा मीठा पके अमरूद का आधा हिस्सा लड़की ने पकड़ रखा था। "मुझे विश्वास है कि तुम दानव की बेटी या पोती नहीं हो, या किसी संयोग से तुम्हारा उससे रिश्ता है?"

''नहीं,'' लड़की ने सपाट-सा उत्तर दिया।

"न ही मैं दानव का बेटा या पोता हूँ, यहाँ तक कि दूर का संबंधी भी," अमरूद पर अपनी नजर टिकाए हुए बापी ने उसे जवाब दिया।

लड़की बापी की उत्साही बोली को बहुत महत्त्व देती हुई नहीं लगी, मगर तुरंत ही अपने झोले में से स्वादिष्ट दिख रहे अमरूद उठाकर उसकी ओर बढ़ाया। उसके जबड़ों ने फिर से अपना काम शुरू कर दिया था।
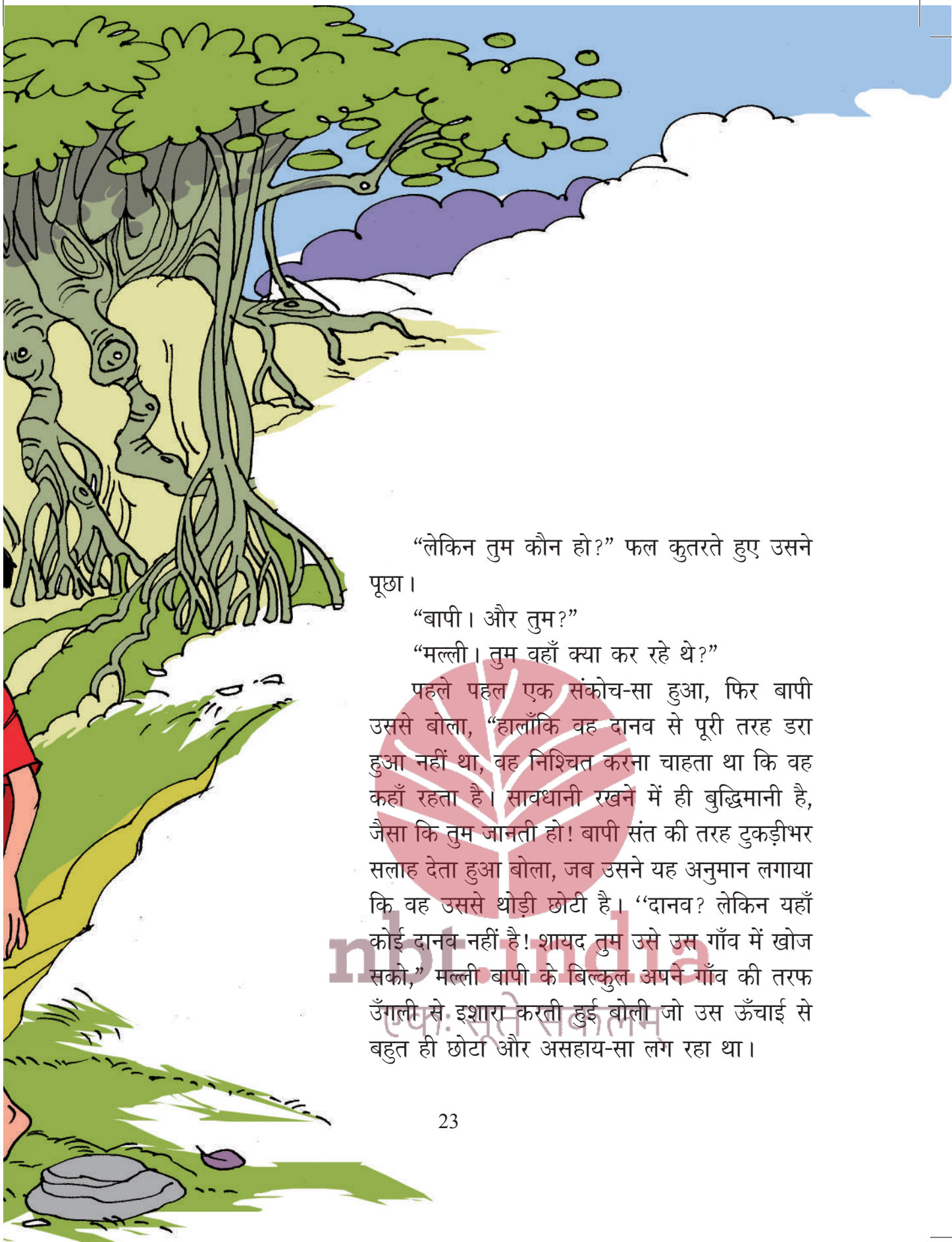
“लेकिन तुम कौन हो?” फल कुतरते हुए उसने पूछा।

“बापी। और तुम?”

“मल्ली। तुम वहाँ क्या कर रहे थे?”

पहले पहल एक संकोच-सा हुआ, फिर बापी उससे बोला, “हालाँकि वह दानव से पूरी तरह डरा हुआ नहीं था, वह निश्चित करना चाहता था कि वह कहाँ रहता है। सावधानी रखने में ही बुद्धिमानी है, जैसा कि तुम जानती हो! बापी संत की तरह टुकड़ीभर सलाह देता हुआ बोला, जब उसने यह अनुमान लगाया कि वह उससे थोड़ी छोटी है। ‘‘दानव? लेकिन यहाँ कोई दानव नहीं है! शायद तुम उसे उस गाँव में खोज सको,” मल्ली बापी के बिल्कुल अपने गाँव की तरफ उँगली से इशारा करती हुई बोली जो उस ऊँचाई से बहुत ही छोटा और असहाय-सा लग रहा था।

“वह वहाँ रहता है, और हर रोज एक नटखट छोटे बच्चे को खा जाता है। हमारे बड़े छोटे बच्चों को ऐसा तब कहते हैं, जब वे उनकी बात नहीं मानते।”

उनकी बातचीत अमरूद चबाने के बीच चलती रही। बापी समझ गया कि वह पहाड़ी पर बसे छोटे गाँव से आई है, जो शिखर से बहुत नीचे नहीं है, दूसरी तरफ की घाटी तक जाने वाली ढलान पर है।

मल्ली का संकोच जल्द ही खत्म हो गया और वह पहाड़ी पर अपनी छोटी-सी दुनिया के अलग-अलग हिस्सों के बारे में बापी को बताने लगी। उसने साहस के साथ काँटों से बचते हुए जंगली पौधों से बापी के लिए दो या तीन तरह के स्वादिष्ट बेर तोड़े। पास ही बहुत सारे मलिन पत्थरों से धारा निकल रही थी जो जैसे-जैसे नीचे बहती जा रही थी, चौड़ी और चौड़ी होती जा रही थी। इसकी धीमी आवाज मधुर थी। छोटी चिड़ियों का एक झुंड इस पर उछल-कूद करने लगा, अपनी चोंच को गहराई

में और पंखों को कम पानी की जगह में रखते हुए, अपने चारों ओर पानी का छिड़काव करने लगा जिससे कई नन्हे इंद्रधनुष की छटा बिखरने लगी।

"उस छोटी चिड़िया को देखो– मेरे दादाजी के हुक्का से निकले धुएँ के गुबार से अधिक बड़ी या भारी नहीं है। हम इसे 'टिकली' कहते हैं। तुम जानते हो, रात को यह क्या करती है? यह उलट जाती है, अपने छोटे-छोटे चारों पैरों को, जो माचिस की तीली से अधिक बड़े या मजबूत नहीं होते, ऊपर की तरफ उठाकर रखती है। क्यों? क्योंकि अगर आसमान नीचे गिरे, तो उसके पैर उसे रोककर, शरीर को चोट पहुँचने से बचा लेंगे।" मल्ली हँसी और बापी हँसा और बिना रुके वे हँसते रहे। यह सच्चाई कि उसने न सिर्फ ऊँचाई पर विजय पाई बल्कि वह अपने गाँव में पहला लड़का था जो इस सच तक पहुँचा था कि पहाड़ी पर कोई दानव नहीं है, उसे उत्साहित कर रही थी। उसकी यह खोज इससे भी कहीं ज्यादा बड़ी थी, जबसे उसने यह समझा कि नीचे उसके गाँव में तो कोई दानव नहीं है, जैसा कि मल्ली मान रही थी, इसका मतलब दानव कहीं भी नहीं है।

कुछ तीतर जो बरगद के पेड़ के घने पत्तों से छिपे बैठे थे, अचानक फुहार की तरह उड़े, जब एक पक्षी उस पेड़ की ऊँची डाली पर बैठ गया।

"मैं इन तीतर पक्षियों को जानता हूँ। ये मेरे गाँव में भी बहुत सारे हैं। लेकिन वह कौन पक्षी है और क्यों उसने उन्हें डरा दिया?" बापी ने हैरानी से अपनी आँखें उस पेड़ पर आए नए अजनबी पक्षी, किंगफिशर पर टिका दीं।

"वह मछरंगा है। मछली इसका रोज का खाना है। अगर तुम पहाड़ से इसके पश्चिमी छोर की तरफ उतरोगे, तुम्हें एक झील दिखाई देगी। यह उस मुख्य धारा से अलग होकर निकली पानी की पतली धार से बनी है, जो तुमने देखा था। यह पक्षी और इसके परिवार के सदस्य अपना समय इसी झील के आसपास बिताते हैं। इसने आज जरूर बहुत सारी मछलियाँ खाई होंगी। यह खुद को ऊर्जावान महसूस कर रहा है। थोड़े बदलाव के लिए यह यहाँ आया है। यह किसी को डराना नहीं चाहता था। मगर वे तीतर हमेशा बेचैन रहते हैं। उनके दूर-दूर तितर-बितर हो जाने के लिए कुछ भी बहाना हो सकता है और फिर कुछ ही देर में वे एक साथ आ जुटते हैं।"
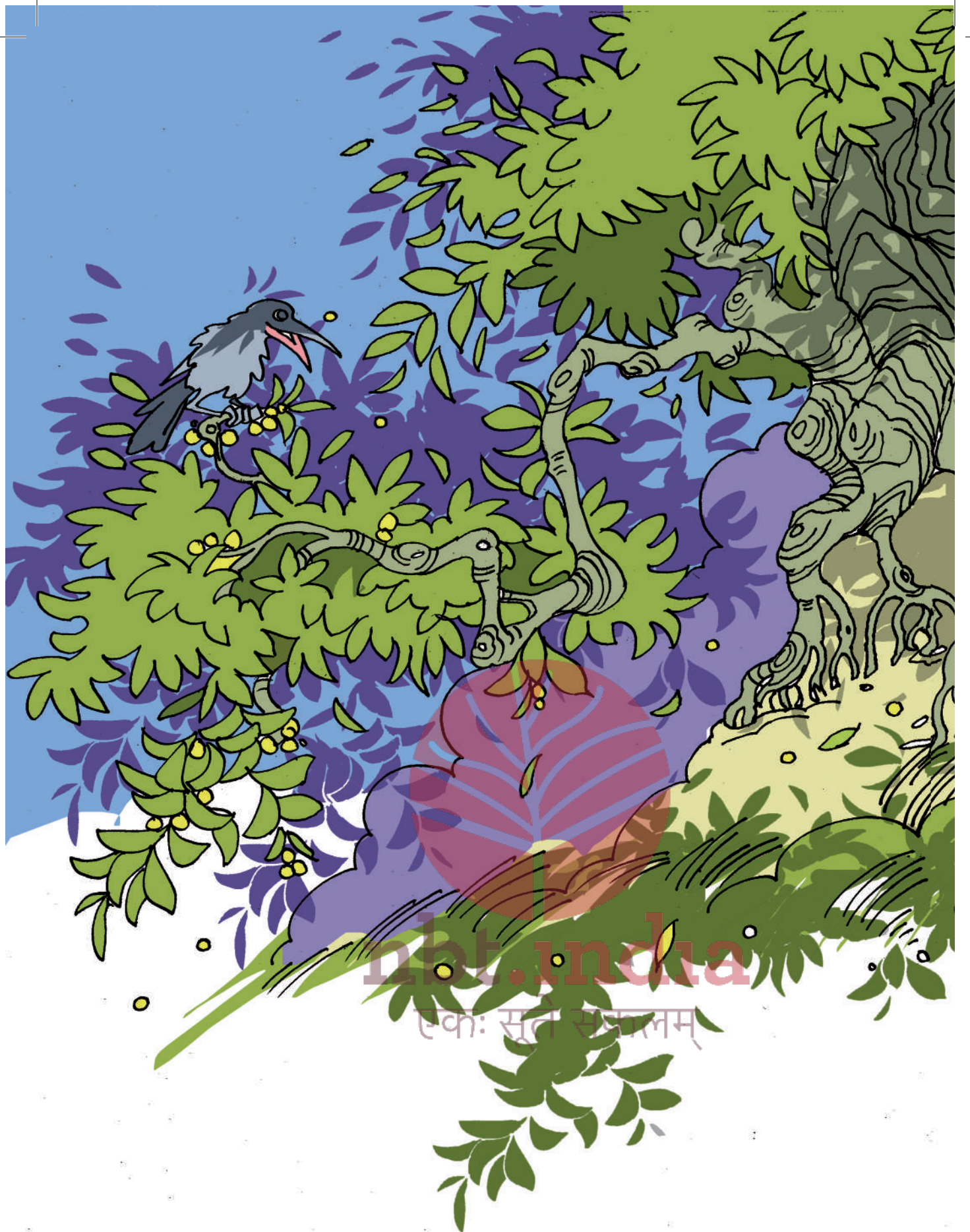
"बरगद का यह पेड़ कितना विशाल दिखता है!" बापी ने ध्यान दिया। "हमारे गाँव में कई पेड़ हैं। मगर जब उनकी तुलना इस एक पेड़ से की जाएगी तो वे सभी पीले पड़ जाएँगे। मगर हम उनकी लटकती जटाओं से झूला बनाते हैं और आगे-पीछे हवा में लहराने का मजा लेते हैं, प्रायः हर दिन सूरज ढलने के समय, बस, जब बारिश होती है, तब नहीं।" बापी बोला और पेड़ की हवाई जड़ों की ओर इशारा करता हुआ पूछा, "मल्ली, क्या तुम नहीं जानती कि किस तरह दो मजबूत रस्सी जैसी इन चीजों को जोड़कर झूला बनाते हैं?"

"मैं जानती हूँ। वहाँ नीचे हमारे घर के सामने पेड़ से झूलती बरगद की दो जटाओं को जोड़कर हमने झूला बनाया है। मगर पिताजी हमें इस पेड़ से झूला बनाने की अनुमति नहीं देते। देखो तो, इस कद के बरगद के पेड़ आम तौर पर पथरीली जमीन पर और ऐसी ऊँचाई पर नहीं बढ़ते। ये लटकने वाली चीजें इसकी जड़ें हैं। धीरे-धीरे और नाजुक तरीके से ये मिट्टी की गहराई में जमती हैं और पेड़ के लिए रस इकट्ठा करती हैं। पेड़ जरूरी शक्ति पाता है। अगर हम उन्हें जमीन के अंदर जाने न दें तो पेड़ कमजोर हो जाएगा। मुझे लगता है कि तुम लोगों के झूला बनाने के कारण ही तुम्हारे गाँव के बरगद के पेड़ पीले पड़ रहे हैं।" मल्ली ने विस्तार से समझाया।

बरगद का एक छोटा-सा फल बापी के सिर पर गिरा और फिसलकर उसके सीने के पास की जेब में चला गया। वह मुस्कराया। "मल्ली, तुम्हें एक किस्सा सुनाता हूँ जो हमारे शिक्षक ने हमें सुनाया था। एक दिन एक यात्री आराम करने के लिए बरगद पेड़ के नीचे बैठ गया। इसके लाल-लाल छोटे फलों को देखता हुआ वह हँसा और अपने-आप से बोला, यह क्या मजाक है कि एक विशाल पेड़ सिर्फ नन्हे से फल देने में समर्थ है! उसी समय एक फल टूटकर उसके सिर पर गिरा। 'भगवान का शुक्र है कि बरगद का फल छोटा है। मेरे बेचारे सिर का क्या होता, अगर पेड़ के आकार के हिसाब से इसपर फल लगे होते?' वास्तव में, प्रकृति ने इसे लोगों को छाँव देने के लिए बनाया है। हमारे गाँववाले ऐसे ही एक पेड़ के नीचे अपनी सभा करते हैं, इसलिए कि इसके फल बहुत हल्के होते हैं।"

"सही," मल्ली सहमत हुई।

जैसे ही बापी ने पेड़ के हरे-भरे शीर्ष को आदर से देखा, उसे लगा ऊपर का

आसमान उसके बहुत करीब आ गया है, उसने महसूस किया मानो वह झटके से फेनिल बादलों को फूँक मार सकता है!

उसने सड़क को भी देखा जो पहाड़ी से मेहराब-सी फैली थी, जिसपर गाड़ी कछुए की तरह अब भी घसीट रही थी!

"देखो मेरा छोटा भाई आ रहा है!" मल्ली ने ताली बजाकर उस लड़के का ध्यान अपनी तरफ खींचा जो गिलहरी की तरह आराम से पहाड़ी चढ़ रहा था। अब बापी ने मल्ली के कस्बे को अच्छी तरह देखा। पेड़ों के झुंड-सा, फूस की झोंपड़ियों का समूह जो पंद्रह से अधिक न होगा। इसे देखकर ऐसा लग रहा था मानो पहाड़ी के विपरीत विराट कैनवास पर कोई तस्वीर बनी हो।

"चलो भी, तुमने वादा किया था कि मुझे पुकारोगी, पुकारा क्यों नहीं? चलो खेलते हैं छुपन..." लड़का चुप हो गया जैसे ही उसकी नजर बापी पर पड़ी।

"यह बापी है। यह भी हमारे साथ खेलेगा," मल्ली अपने छोटे से भाई के बिखरे बालों में अटके सूखे पत्ते हटाती हुई बोली।

बापी की भी कितनी इच्छा थी कि वह भाई-बहन की टोली के साथ खेले, मगर उसे गाड़ी के घाटी में पहुँचने से पहले घाटी पहुँचना जरूरी था। उसने आभार जताते हुए, जरा पछतावे के साथ कहा, "लेकिन मुझे अभी जाना होगा!"

"क्या तुम कुछ अमरूद लेना चाहोगे?" मल्ली ने पूछा।

"मेरे छह दोस्त दूर उस गाड़ी में हैं, क्या तुम इतने अमरूद दे पाओगी?"

"हाँ जरूर," मल्ली बोली। छह अमरूद गिनने के बाद वह एक सातवाँ अमरूद उसके हाथ में थमाती हुई बोली, "एक अधिक तुम्हारे लिए।"

"मुझे यह अमरूद लतबर को देना चाहिए। हालाँकि वह मेरे प्रति निर्दयी रहा है।" बापी ने मानो अपने-आप से कहा जब तीन अमरूद अपने निकर की बायीं, और तीन दायीं और एक सीने के पास की जेब में रख रहा था।

"वह कौन है?'' मल्ली ने जानना चाहा।

"वह जिसने किसी महाकाय से मूँछ जीती है!"

"महाकाय? क्या तुम्हारे शिक्षक ने नहीं पढ़ाया जैसे कि मेरे पिताजी ने मुझे बताया है? महाकाय शायद बहुत-बहुत साल पहले होते थे। अब किसी ने उन्हें नहीं देखा,

हालाँकि हम कहानियों में उनके बारे में सुनते हैं।" अपने स्वर में पूरे आत्मविश्वास के साथ मल्ली ने बताया।
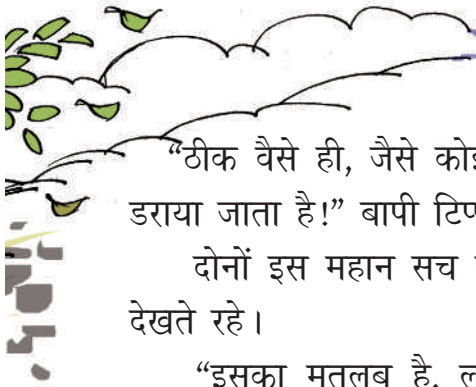
"ठीक वैसे ही, जैसे कोई दानव नहीं है जिसके नाम पर यहाँ और वहाँ बच्चों को डराया जाता है!" बापी टिप्पणी करता हुआ बोला।

दोनों इस महान सच की मिलकर खोज करने के आनंद में भरकर एक-दूसरे को देखते रहे।

"इसका मतलब है, लतबर झाँसा दे रहा था," बापी ने गौर किया और हँसा। दरअसल वह कुछ देर तक हँसता ही रहा। "फिर भी, मैं उसे एक अमरूद दूँगा" वह बोला। "और फिर भी तुम्हारे लिए एक बचा रहेगा," वह खुलकर हँसती हुई बोली, जब वह उसके सीने के पास की भरी हुई जेब में आठवाँ अमरूद ठूँस रही थी।

बापी ने वादा किया और उम्मीद रखी कि वह वहाँ फिर आएगा और उछलता-कूदता और नीचे उतरा। यह बहुत मजेदार था। एक बार पीछे मुड़कर उसने मल्ली और उसके भाई को देखा जो मुस्कराते हुए उसकी तरफ देख रहे थे।

"सावधान रहना मेरे बच्चे!" एक बड़ा आदमी बोला जो पहाड़ी पर चढ़ रहा था। बापी रुका और उसकी ओर देखने लगा। वह आदमी मुस्कराया।

वह वहाँ से कुछ और नीचे उतरा जहाँ वह एक बूढ़ी औरत से मिला जो सूखी पत्तियाँ बटोर रही थी। "होशियार रहना बेटा," वह बोली और उसने भी उसकी तरफ मुस्कराकर देखा।

अब, वह घाटी में था। वहाँ झोंपड़ियों की एक कतार थी और बापी ने वहाँ कई नए चेहरे देखे। वह हैरान हुआ कि सभी उसकी तरफ मुस्कराकर देख रहे थे।

मेरी जिंदगी में, इतने सारे लोगों ने मेरी तरफ कभी मुस्कराकर नहीं देखा। वह बार-बार अपने-आप से कहता रहा और इस बारे में जानने को अधिक, और अधिक उत्सुक हो उठा।

पंक्ति की अंतिम झोंपड़ी के पहले एक छोटा बच्चा सीने से धारीदार भूरी बिल्ली चिपकाए खड़ा था, और उसने भी बापी की तरफ मुस्कराकर देखा।

बापी रुक गया। "सुनो!" उसने फुसफुसाकर बच्चे से पूछा, "तुम मुझे देख कर क्यों मुस्कराए?"

"क्यों! क्या तुम मुझे देखकर मुस्करा नहीं रहे थे?" बच्चे ने एक बड़ी मुस्कान के साथ जवाब दिया, जिसमें उसकी बिल्ली भी शामिल होती लग रही थी। तो, यह रहस्य

था! बापी ने अपना सिर हिलाया। उस समय से वह लगातार मुस्कराता रहा और जिनकी नजर उसपर पड़ी, बदले में उन सभी ने मुस्कान लौटाई।

"एक चेहरा जो हमेशा (आँसुओं से) भीगा रहता था, फिर कभी मेरा नहीं होगा!" उसने अपने-आपको यकीन दिलाया।
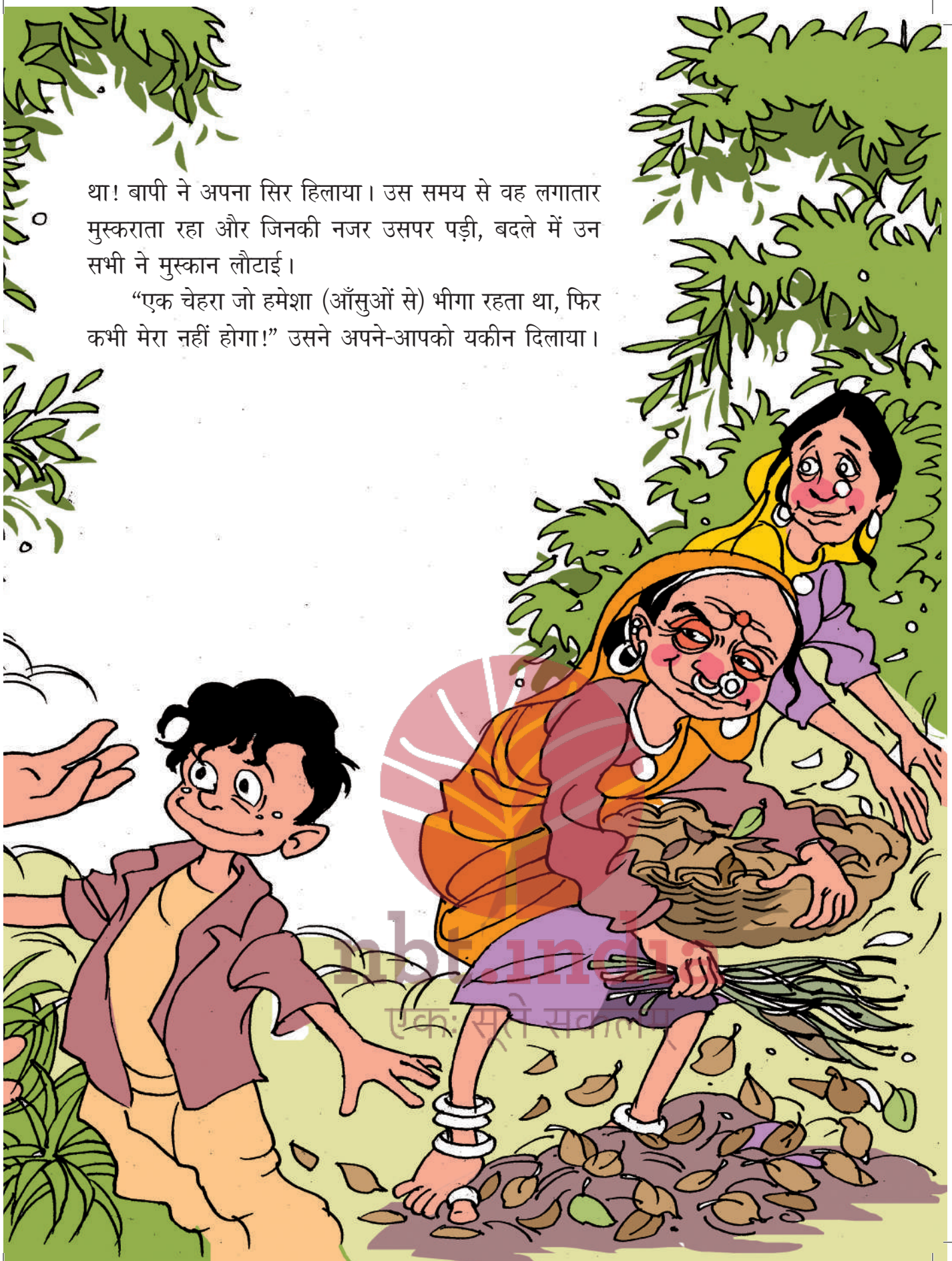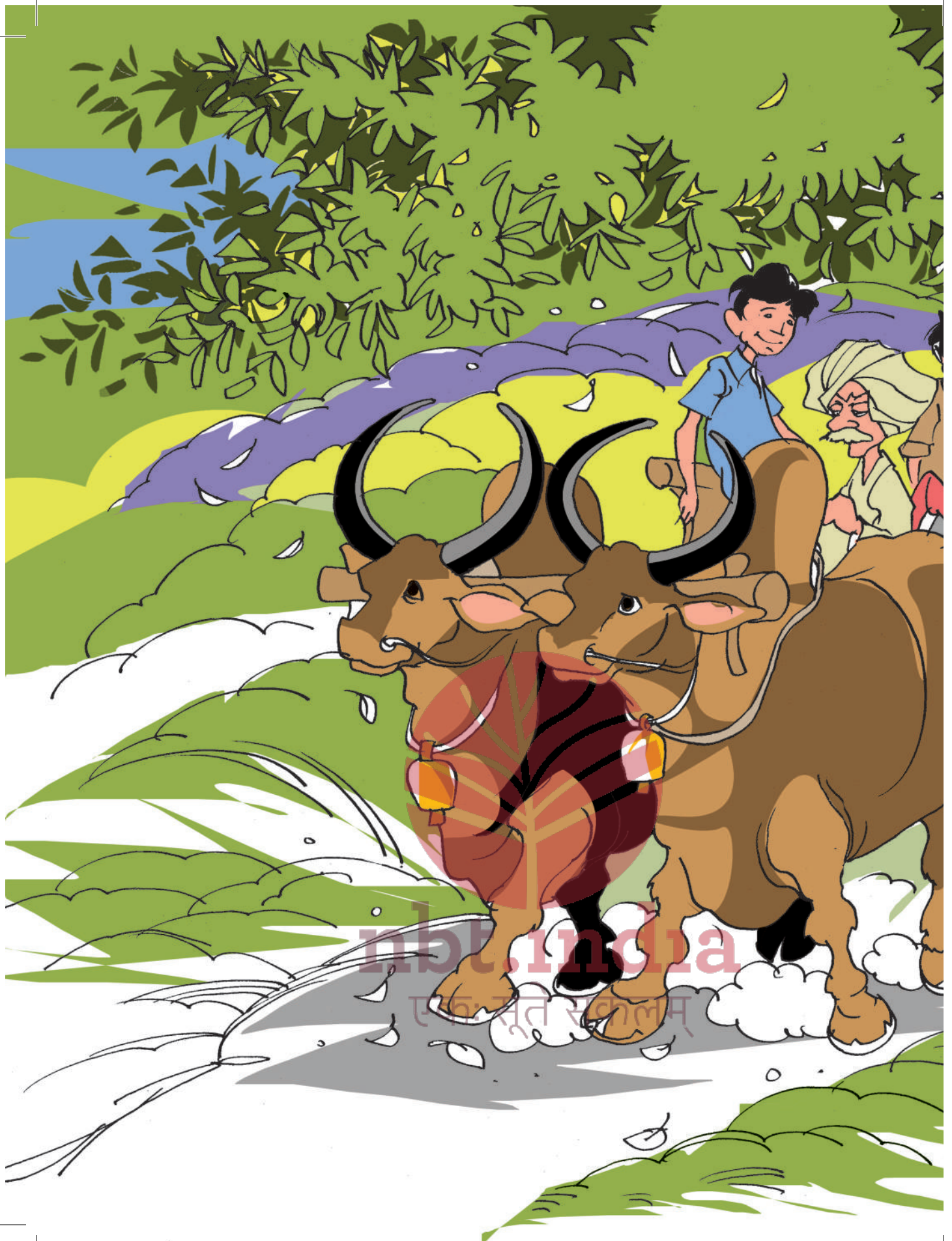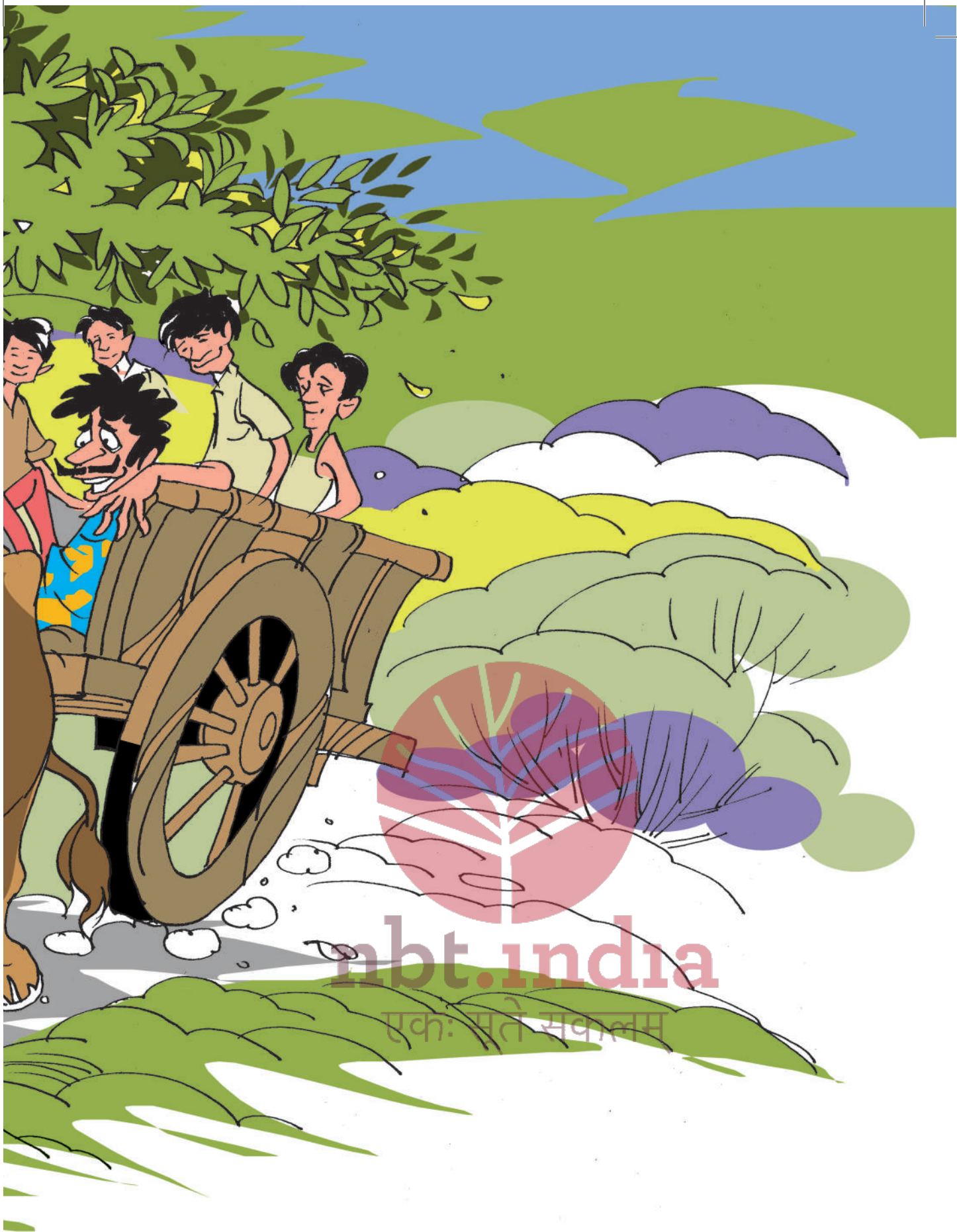
गाड़ी नदी के किनारे पहुँच रही थी।

"रवि! बादल! धूमल! जय! शिव! साबू! देखो इधर कौन है!" बापी चिल्लाया।

सभी लड़के धीमी चल रही गाड़ी से कूद पड़े और दौड़कर उसके पास आ गए, हैरत में उनकी आँखें खुली रह गईं। लतबर गाड़ी में गहरी नींद में सोया पड़ा था।

बापी उनमें से हर एक के हाथ में एक अमरूद पकड़ाते हुए अपनी साहसिक यात्रा के बारे में बताने लगा। वे सब इतने गौर से सुन रहे थे कि अपने-अपने अमरूद एक-दो बार खाने के बाद उसे खाना ही भूल गए।

"तो तुम लोग समझे, नहीं समझे क्या?– कि कहीं भी कोई दानव नहीं है। ना ही पहाड़ी पर, न ही नीचे और यही बात महाकाय के मामले में भी लागू होती है।" बापी ने निष्कर्ष निकाला। वह कुछ और भी कहना चाहता था– कि अगर कोई दुनिया को एक मुस्कान देता है तो दुनिया बदले में उसे मुस्कान लौटाती है। मगर दूसरे पल सोचने पर उसे लगा कि बुद्धिमानी भरा यह विचार कहने के लिए वह अभी बहुत छोटा है।

"शायद अंतिम महाकाय लड़ाई में बहुत कमजोर होगा और इसलिए उसने हार मान कर लतबर को अपनी मूँछ दे दी।" शिव ने सोचकर कहा।

"अब, मुझे बताओ," बापी ने अनुरोध किया "तुम लोगों की यात्रा कैसी रही?"

"यह न ही बुरी रही और न ही अच्छी। हालाँकि लतबर, अपने इस साहसिक कारनामे और ट्रॉफी के बारे में बताने के तुरंत बाद सो गया कि महाकाय की मूँछ उसे कैसे मिली।" बादल ने बताया।

"वैसे, साहसिक कारनामा था क्या?" बापी ने पूछा और लड़कों ने इसे सुनाना शुरू किया। जब बादशाह लतबर को अपनी मूँछ छोटी कराने के लिए राजी करने में असफल रहा, उसने अपने पहरेदारों से उसकी मूँछ काट देने का आदेश दिया। हैरानी की बात यह हुई कि जैसे ही मूँछ लतबर से अलग हुई, वह दो भागों में बँटकर दो दिशा में भागने लगी। शाही पहरेदारों और दरबारियों और यहाँ तक कि बादशाह खुद अस्त-व्यस्त होकर उन दौड़ती-भागती मूँछों के पीछे भागे, मगर कुछ हाथ न आया।

हालाँकि जैसे ही लतबर दरबार से बाहर आया, मूँछ लतबर की नाक के नीचे अपनी

जगह पर फिर से चिपक गई! बादशाह ने लतबर के असाधारण जादुई चरित्र को स्वीकार किया और उसे गले से लगा लिया। इस तरह वे दोस्त हो गए।

"एक दानव की मूँछ में कुछ तो जादुई होता है," रवि गौर करता हुआ बोला।

"क्यों न हम इस जादू को दोबारा देखें?" बापी ने दबे स्वर में प्रस्ताव रखा। एक मिनट के लिए वहाँ गहरी खामोशी छा गई, जब सभी लड़कों ने इस सुझाव का महत्त्व महसूस किया– एक रोमांचक नयापन।

अगर उसने सचमुच वह मूँछ अंतिम दानव से जीती है, जादू दोबारा भी होना चाहिए। अगर यह झूठ है, वह इसे गँवाने के लायक है। जय साहस करके बोला। वे उत्साहित और आतुर थे।

नजदीक के उस मछुआरे के घर से कैंची उधार माँग लाना बहुत मुश्किल नहीं था, जो जाल बुन रहा था। लतबर अब भी सोया था। लड़कों ने उसके भयानक खर्राटे से साहस बटोरा। वह धूमल था, जिसने उसकी मूँछ कैंची से कतर डाली, हालाँकि उसके हाथ काँपते रहे। मूँछ नीचे गिर पड़ी। लड़के बल्ले-सी उछलती साँसों से उस आधी मूँछों की जोड़ी के भागने का इंतजार करने लगे ताकि वे उन्हें पकड़ सकें। मगर वे बहुत अधिक खून पीकर मरे हुए विशाल जोंक की जोड़ी की तरह नीचे पड़ी रहीं।

"मुझे लगा ही था कि इस तरह कुछ होगा। जब वहाँ कभी कोई महाकाय था ही नहीं तो उससे कोई मूँछ जीतने का सवाल ही नहीं उठता। और चूँकि शुरू से ही उसकी मूँछ साधारण थी, इसलिए उसमें कोई जादू नहीं हो सकता था," बापी ने बड़े आदमी की तरह गौर किया। दूसरे भी अलग-अलग शब्दों में अपनी सहमति जताई– खुशी और उत्साह के साथ।

"कोई बात नहीं। वह इसे फिर उगा लेगा। तब तक हम इसके लिए एक तोहफा छोड़ जाते हैं," लतबर के बगल में एक अमरूद रखता हुआ बापी बोला। तब, वह एक अमरूद जो मल्ली ने उसके लिए दिया था, उसने गाड़ीवान को दिया।

बापी के सरदार वाले व्यवहार से किसी को कोई शिकायत नहीं थी, यह उसने अनायास ही प्राप्त कर लिया– बिना घमंड की थोड़ी-सी भी झलक दिखाए।
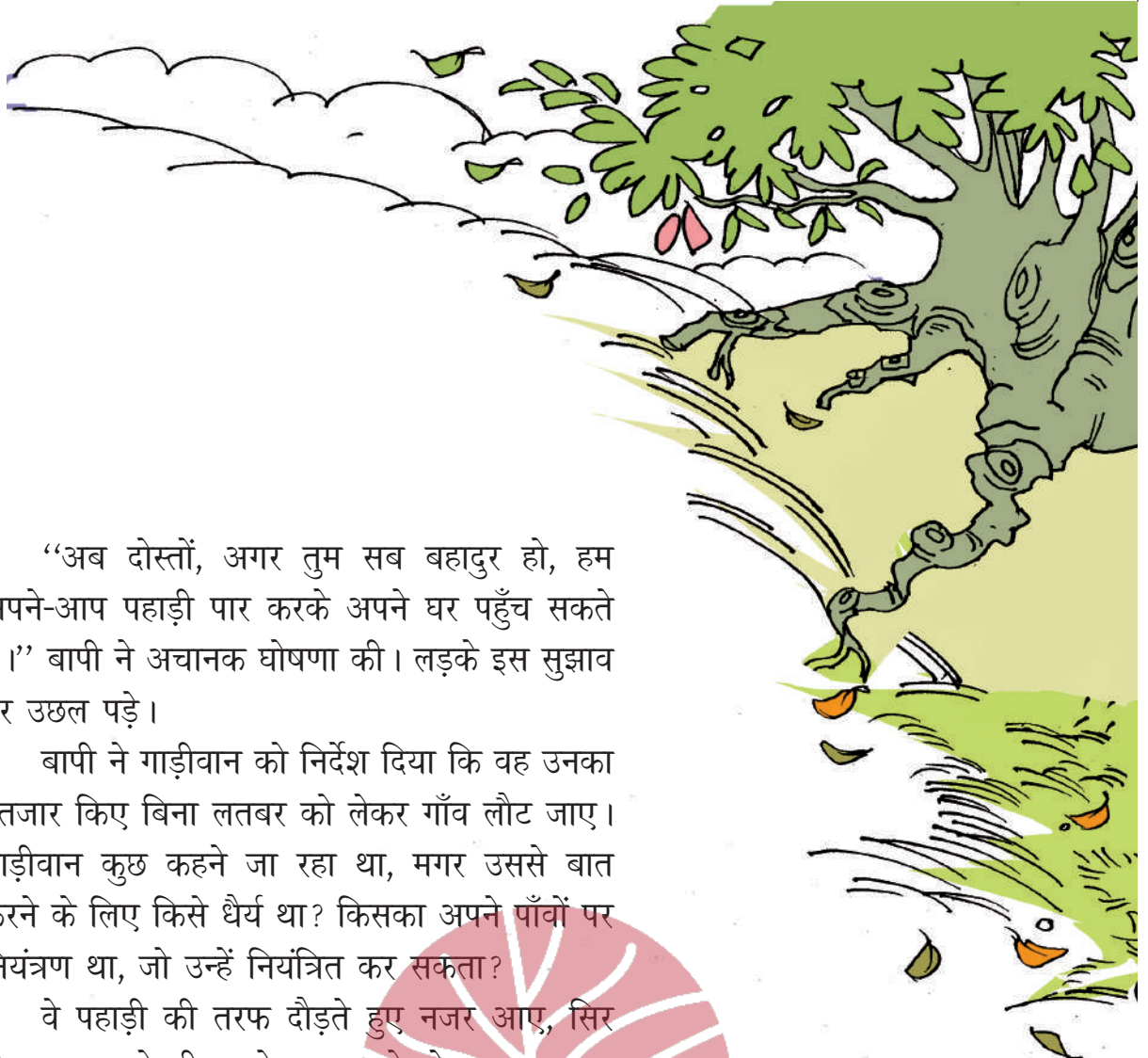
“अब दोस्तों, अगर तुम सब बहादुर हो, हम अपने-आप पहाड़ी पार करके अपने घर पहुँच सकते हैं।” बापी ने अचानक घोषणा की। लड़के इस सुझाव पर उछल पड़े।

बापी ने गाड़ीवान को निर्देश दिया कि वह उनका इंतजार किए बिना लतबर को लेकर गाँव लौट जाए। गाड़ीवान कुछ कहने जा रहा था, मगर उससे बात करने के लिए किसे धैर्य था? किसका अपने पाँवों पर नियंत्रण था, जो उन्हें नियंत्रित कर सकता?

वे पहाड़ी की तरफ दौड़ते हुए नजर आए, सिर के ऊपर उड़ते तीतर के एक बच्चे के साथ लगभग तालमेल बिठाते हुए से।

लिटिल बर्डस, दिल्ली द्वारा शब्द संयोजन तथा एजुकेशनल स्टोर्स, गाजियाबाद (उ.प्र.) द्वारा मुद्रित